International Journal of Applied Research 2018; 4(5): 482-483

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2018; 4(5): 482-483
www.allresearchjournal.com
Received: 27-03-2018
Accepted: 29-04-2018

Dr. Sunita Kumari
Assistant Professor, Department of AI & As, Ancient History, Sanjay Singh Yadav College Gaya, Bihar, India

Corresponding Author:
Dr. Sunita Kumari
Assistant Professor, Department of AI & As, Ancient History, Sanjay Singh Yadav College Gaya, Bihar, India

बौद्ध धर्म का विश्व में परचार प्रसार

Dr. Sunita Kumari

प्रस्तावना:

बौद्ध र्ध ने विश्वशांति हेतु अपूर्व विकल्प वन विश्व–यात्रा की है। यह धर्म मानवमात्र ही नहीं सभी जीवों के प्रति मैत्री–भावना का संदेश प्रवाहित करता है। सुत्त निपात के उरगवग्ग का 'मेत्तसुत्त' में इसकी विशद चर्चा हुई। 'मेत्तसुत्त' को बौद्ध धर्म के शांति दर्शन में 'ब्रह्मविचार' की संज्ञा से विभूषित किया गया है। भला कौन नहीं 'ब्रहाविचार' की कामना रखता है, चाहे वह किसी देश भूमि काल खण्ड में ही जीत है। 'ब्रहाविचार' का यह अंश भगवान बुद्ध की स्वअभिव्यक्ति पर आधारित है जो सभी प्राणियों के कल्याण और मैत्री–भावना का संबंध रखने की घोषणा करता है यही घोषणा, महान संदेश के रूप में, विश्वशांति की स्थापना हेतु विश्व–यात्रा कर रही है।

सर्वप्रथम भारतीय इतिहास में सम्राट अशोक (ई०पू० 269 – 232 ई०पू०) ने धम्म–नीति के तहत बौद्ध धर्म की विश्वशांति के दर्शन को दुनिया के विभिन्न देशों पहुँचाया। सम्राट का यह कदम समाजशास्त्री और मनौवैज्ञानिक के सामन थाा, जिससे दुनिया के अन्य देशो में बौद्ध धर्म के शांति दर्शन के विरूद्ध किसी धर्मान्तरण प्रक्रिया का भाव प्रकट नही हो सके, उन्होने इस प्रयास में मानवोचित या समाजोचित धर्म या शांति भाव को प्रकट किया। इसके लिए उन्होने अपने पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा को संघ को समर्पित कर विश्वख्याति अर्जित की। महेन्द्र और संघमित्रा ने बुद्ध संघ की शरण मे आकर भिक्खु की उपसम्पदा ग्रहण की और धर्म के प्रार हेतु भारत से बाहर श्रीलंका की यात्रा पर निकल पड़े। इस तरह बौद्ध धर्म भारत की भागौलिक सीमाओं को भारत की पुण्य भूमि की यात्रा के लिए प्रेरित कने लगा।

श्रीलंका के इतिहास ग्रंथ 'दीपवंश' एंव 'महावंश' से हमें ज्ञात होता है कि श्रीलंका के राजा 'देवानामप्रियतिस्स' भारत में धर्माशोक के राज्य करते समय अपने मंत्री को रत्नराशि के साथ पाटलिपुत्र (पुष्यपुर) भेजा था। 'दीपवंश' के ग्यारहवे परिच्छेद में इनका वर्णन उपलब्ध है। उस समय महाअष्टि 'नामक प्रधानमंत्री के साथ चार अधिकारी भारत आए थे। यह पाँच माह तक निरन्तर पाटलिपुत्र में ससम्मान रहे, तद्न्तर वैशाख मास की द्वादशी तिथि को जम्बुद्वीप से लंकाद्वीप वापस गए थे। इस अवसर पर राजा 'देवानाप्रियतिस्स' का दुबारा राज्याभिषेक हुआ था। वह दिन वैशाख मास का पूर्णिमा का था। इसके एक मास बाद पुरूष श्रेष्ठ महेन्द्र थेरो लंका पधारे। इस प्रकार सद्धर्म उन्नयन में भरतेतर प्रयासो मे श्रीलंका के प्रयासों की सर्वप्रथम अभिव्यक्ति 'दीपवंश' में उद्घाटित है। इस प्रकार श्रीलंका के महान भिक्खुओं द्वारा बौद्धधर्म सर्वप्रथम विश्वधर्म बनने की राह पर अग्रसर हुआ।

इसके अतिरिक्त सम्राट अशोक ने कश्मीर और गंधार, महिषामंडल, वनवास, आपरांतक और विदेशो में स्थावितरो की बौद्ध धर्म प्रचार हेतु भेजा। इन्हीं स्थविरो के सद्प्रयास से बौद्ध र्ध अपनी सीमाएँ लाँता जन–जन तक पहुँ, सिंहल स्त्रोतों में भी यवलोक, हिमंत प्रदेश, सुवर्ण प्रदेश, लंकाद्वीप का उल्लेख है। हिमालय प्रदेश, सुवर्ण प्रदेश, लंकाद्वीप का उल्लेख है। हिमालय प्रदेश के अन्तर्गत नेपाल आता है जहाँ अशोक ने अपनी बहन चारूमति को भेजा था। चारूमती के अथ्क प्रयास से ही काठमाण्डू में भिक्षुणी संघ बना और एक बिहार की भी स्थापना हुई। इस बिहार को आजकल 'चावेल' नाम से जाना जाता है जो वर्तमान पशुपतिनाथ मंदिर से जाना जाता है जो वर्तमान पशुपतिनाथ मंदिर से पश्चिम अवस्थत है। 'चावेल– संक्षिप्त नाम है चारूमति बिहार का, पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा श्रीलंका में बौद्धधर्म के संवाहक बने महेन्द्र के साथ सुमन श्रामणेर भी लंका गए थे, जिन्हें लंका का राजा 'तिष्य' मे धातु स्तूप बनाते समय धातु लाने हेतु अशोक के दरबार मे भेजा था। ये जन्म तो भारत मे लिये थे, परन्तु लंका जाकर बौद्धधर्म का प्रचार–प्रसार किया।

आधुनिक युग में 'अनागारिक धम्मपाल' ने भी बौद्धधर्म के विकास हेतु अति सरायहनीय कार्य किया। श्रीलंका के महान सपूत साबित हुए, जिन्होने पश्चिमी देशो में धर्मप्रचार के लिए लन्दन में 'विहार– की स्थापना की थी। भारत भूमि में बौद्धधर्म पुनर्जागरण में देवमित्र अनागारिक धम्म्पाल की भूमिका अति सराहनीय और अनुकरणीय इन्हीं के सार्थक प्रयासों के कतिपय पुरातात्विक स्थल बौद्ध–धरोहर

के रूप गवेशित और संरक्षित हो सके है। इन्हीं देदीप्यामान नक्षत्रों के कारण बोधगया की पुण्यभूमि आज इस रूप में देखी जा रही है। इसके लिए इन्होने 1891 के जनवरी में महाबोधि–सभा की स्थापनाक ी, जिसके सद्प्रयास से भारत मे बौद्ध–धर्म के विकास में कार्यरत यह महत्वपूर्ण संस्था बनी है। कलकत्ता, सारनाथ और बोधगया मे ंविहार बनाने का लक्ष्य तो इनके जीवनाल में ही पूर्ण हो चुका था। सन् 1892 से प्रकाशित अंग्रेजी पत्रिका 'महाबोधि' इनकी साहित्यक गतिविधि का प्रमाण है तथा हिन्दी पत्र 'धर्मदूत' का निरन्तर प्रकाशन इन्ही की प्रेरणा और आर्शीवाद से संभव हुआ है।

डॉ० प्रबोधचन्द्र बावगची ने अपनी रचना 'इण्डियन एण्ड चाइना' मे ंस्पष्ट किया कि 126 ई० पू० धर्मोपदेशकों का समूह व्यापारिक उद्देश्य से चीन गया था और बौद्ध धर्म का प्रवेश उन्हीं के माध्यम से यहाँ हुआ। इस सांस्कृतिक मिलाप का श्रेय भिक्खु कश्यप मंतग और धर्मरक्षित (धर्मरत्न) को दिया जाता है। इसके पश्चात ही चीनी यात्रियों द्वारा भारत की यात्रा बौद्ध धर्म के अध्ययन और उन्नन क उद्देश्य से प्रारम्भ हो गयी।

समुअल बील महोदय ने 'बुउिस्ट रिकॉर्ड्स ऑफ वेर्स्टन वर्ल्ड' के र्पामि भाग में चीनी यात्री 'सुन–यु– और 'हुएनसेंग' की यात्रा–वृतांत का अनुवाद किया। प्रसिद्ध यात्रि ी युवानच्वांग के यात्रा वर्णन का प्रथम फ्रेंच अनुवाद एम० जुलियन द्वारा 1857–58 में परिस में किया गया। पुनः एस० बोल द्वारा अंग्रेजी में 'बुद्धिस्ट रिकॉडर्स आफ वेस्टर्न वर्ल्ड' शीर्षक से इसे दो भागों में वर्ष 1884 में प्रकाशित किया गया। इस प्रकार सत्साळितय की अंगुली थाम बौद्ध धर्म प्रत्येक बुद्धि जीवियों को सजह करने लगा।

चीनी यात्री फाहियान ने बौद्ध धर्म से प्रभावित होकर न सिर्फ भारत वरन् अन्य देशों का भी भ्रमण किया और सद्धर्म प्रचार हेतु धर्म–प्रवचन भी किया। फाह्यान की यात्रा अवधि 399ई० से 414 ई० मानी गई है। इस प्रकार सोलह वर्षो तक वह यात्रा के साथ ही धर्मप्रचार कार्या से भी जुड़े रहे। जब फाह्यान श्रावस्ती पहुँचे तो वह जेवतन बिहार जा कर विचार किया कि कैसे बुद्ध के जीवन का 25वर्ष यहाँ बीता होगा। फाह्यान कपिलवस्तु जाने के पूर्व तीन पूर्व बुद्धो–कश्यप, ककुचछन्द और कनकमुनि के जन्म–स्थानो का भी दर्शन किया। कपिलवस्तु से वह लुम्बिनी उद्यज्ञन फिर रामगाम होते हुए कुशीनगर भी गए तत्पशत वैशाली, पाटलिपुत्र (गंगापार कर) बोधगया, सारनाथ, राजगृह, गया व कौशाम्बी होते हुए घेषिताराम बिहार भी गए। गृद्धकूट पर्वत पर बुद्ध के पद्चिह्नो की पूजा कर भाव विह्वल हो उठे तथा बुद्ध द्वारा किए गए 'सुरग सुत्त' का पाठ भी किया। रात्रि विश्राम इसी स्थान पर किया तथा पाटलिपुत्र में 3 वर्षो तक रकर चम्पा होते हुए सिंहलद्वीप गए।

चीन देश से दूसरा प्रमुख आगन्तुक बौद्ध भिक्खू हवेनसांग थे जो अपने बड़े भाई से प्रभावित होकर भारत की यात्रा की तथा नालन्दा, कामरूप, कजंग आदि का भम्रण करते कन्नौज की धर्म–सभा को सम्बोधित कर बौद्ध धर्म के मर्म को उद्घाटित किया। यह प्रयाग के छठे महामोक्ष परिषद मे भी अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा जालंचधर सिन्ध नदी को पार करते पामीर, खोतान होते भारत 645 ई० में अपने देश गए।चीन के अन्य यात्रियों मे ंइत्सिंग (691–651ई) का नाम भी श्रद्धा से लिया जाता है। ये 'शानयू' और हिवसी' दो गुरूओं से बौद्धधर्म का शिक्षा प्राप्त कर 17 वर्ष की अवस्था में भारत आए, पुनः बोधगया (महाबोधीत बिहार) तथा नालन्दा गये। महाबोधि बिहार में नीला रेशमी वस्त्र भगवान का अर्पण किया तथा गुरू हिवसी द्वारा प्रदत वस्त्र को भी मूर्ति पर अर्पण किया। विविध स्थानों की पूजा अर्चना के पश्चात वे दस वर्षो तक (सन् 675 से 695 ई) नालन्दा में ही अध्ययन हेतु ठहरे। यही उनकी भेंट अन्य चीनी भिक्खु से हुई। वापसी में वे नालन्दा से साम्रलिप्ति से पुनः चीन हेतु प्रस्थान किए। काँची महलाला होते ये क्वांगफू पहुँचे इसके पूर्व 'श्री भोग' मेंरूके और राजा से विनती कर बुद्ध विहार की स्थापना करायी। इत्सिंग 25वर्षो तक धर्म यात्रांए करते रहे और शेष जीवन अनुवाद साहित्य को समर्पित किया। 700 ई0 से 712 ई0 तक उन्होने 56 पुस्तको का 235 जिल्दो में अनुवाद किया। इन महत्वपूर्ण योगदान को भला कैसे भूला जा सकता है।

बौद्ध धर्म की विकास–यात्रा को ैारिया' के ीिक्खू 'ही चाओ' ने भी आगे बढ़ाया ये 726–729 ई भारत आए उनके तथा 'उ–कुंग' के विरण (751–790) से ज्ञात होता है आठवी सदी में कपिशा, गान्धार, उडिउ्यान तथा कश्मीर में सद्धर्म प्राचार का कार्यक्रम था। अन्यत्र भी उल्लेख है कि ई० सन् 966 ई० में 'शिंग–चिंग' और 146 चीनी भिक्खु बौद्ध ग्रंथो के संकलन हेतु कशमीर आये थे।

इस प्रकार हम पाते है कि बौद्ध धर्म की विश्वयात्रा भिक्खुओ के मायम से प्रारम्भ हुई थी जो अब तक जारी है और भविष्य में भी जारी रहेगी। आज यह 'विश्वधर्म' बन चुका है।

संदर्भ ग्रथ सूची

1. सिंह परमानंद (सम्पादक) दीपंवश, बौद्ध आकार ग्रथ माला महात्म गाँधी काशी विद्यापीठ वाराणी 1996 ई०
2. महावशं बौद्ध आकर ग्रंथमाला महात्मा गांधी कशी विश्वविद्यरलय वाराणसी 1996
3. बागची प्रबोधचन्द–इण्डिया एण्ड चाइना, दि सं० न्यूयार्क 1951
4. पाण्डेय जी0 सी0 बौद्धधर्म के विकास का इतिहास हिन्दी समिति लखउऊ 1976 ई०
5. बोल एस० ' लाईफ आफफ हवेनसांग मुंशी राम और मनोहर लाल दिल्ली 1976 ई०
6. पाण्डेय राजवली प्राचीन भारत हिस्सा नहीं प्रकाशन वारायसी 2002 ई
7. बोल एस0 : बुद्धिस्ट स्थिल ऑफ वेस्टर्न वर्ल्ड, आरेयेटल बुक्त रीप्रिय दिल्ली 1969 ई०
8. कौशल्यायन भदन्त आनन्द' बौद्ध धर्म के पुरूद्वारक अनगारिक धम्मपाल और संघराज शरणाकर बुद्ध भूमि नागकर 1963 ई०
9. गाइल्स एच ए – दि ट्रवक्स आफ फाहयान और रिकार्ड ऑफ द बुद्धिस्टिक किंगडम्स, पृत्वी प्रकाशन, वाराणी 1962
10. लेग्गे जे : फो क्यू की (अनुवाद जे० लेग्गे) दिट्रेवल्स आफ फायह्यान (399–414ई०) ओरियंटल पब्लिशर्स, नई दिल्ली 1971